गुरु नानक – सबद ४६

अमल गलोला कूड़ का दिता देवणहार ॥

राग सिरिराग, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, १५

अमल गलोला कूड़ का दिता देवणहार ॥
मती मरण विसारिआ खुसी कीती दिन चार ॥
सच मिलिआ तिन सोफीआ राखण कउ दरवार ॥१॥
नानक साचे कउ सच जाण ॥
जित सेविऐ सुख पाईऐ तेरी दरगह चलै माण ॥१॥ रहाउ ॥
सच सरा गुड़ बाहरा जिस विच सचा नाउ ॥
सुणहि वखाणहि जेतड़े हउ तिन बलिहारै जाउ ॥
ता मन खीवा जाणीऐ जा महली पाए थाउ ॥२॥
नाउ नीर चंगिआईआ सत परमल तन वास ॥
ता मुख होवै उजला लख दाती इक दात ॥
दूख तिसै पहि आखीअहि सूख जिसै ही पास ॥३॥
सो किउ मनह विसारीऐ जा के जीअ पराण ॥
तिस विण सभ अपवित्र है जेता पैनण खाण ॥
होर गलां सभ कूड़ीआ तुध भावै परवाण ॥४॥५॥

सार: ब्रह्मांड एक आध्यात्मिक एकता है, जहाँ अदृश्य, अंतर्निहित ऊर्जा हर सृजन में समाई हुई है। यह ऊर्जा सकारात्मक और नकारात्मक अनुभवों को जन्म देती है। यह विरोधी अनुभव हमें मूल्यवान सबक सिखाते हैं, जो हमारी समझ को गहरा करते हैं और दिखाते हैं कि जब हम प्रकृति में परस्पर जुड़ाव के शाश्वत सत्य को अपनाते हैं, इससे शांति प्राप्त होती है और सम्मान सही मायने में अर्जित होता है।

अमल गलोला कूड़ का दिता देवणहार ॥

नकारात्मकता का मनमोहक आकर्षण सर्वव्यापी, अदृश्य चेतना की ही अभिव्यक्ति है।

मती मरण विसारिआ खुसी कीती दिन चार ॥
मोह माया में फंसा मन यह भूल जाता है कि सब कुछ नश्वर है और अस्थायी सुखों में लिप्त हो जाता है जो केवल क्षणिक खुशी प्रदान करते हैं।

सच मिलिआ तिन सोफीआ राखण कउ दरवार ॥१॥
जो सत्य को खोजते हैं, उनका उद्देश्य शुद्ध होता है और वह सच्चे ज्ञान की ओर अग्रसर होते हैं। (१)

नानक साचे कउ सच जाण ॥
नानक कहते हैं, हमें उस सर्वव्याप्त चेतना को पहचानने का प्रयास करना चाहिए जो शाश्वत सत्य है।

जित सेविऐ सुख पाईऐ तेरी दरगह चलै माण ॥१॥ रहाउ ॥
जो लोग इस वास्तविकता को स्वीकार करते हैं वह शांति प्राप्त करते हैं और एकता के इस क्षेत्र में वह सम्मान प्राप्ति की ओर बढ़ते हैं। (१)(विराम)

सच सरा गुड़ बाहरा जिस विच सचा नाउ ॥
आध्यात्मिकता, अपने प्रतीकात्मक सार में, नशे का एक ऐसा अनूठा रूप है जो सांसारिक सुखों से नहीं बल्कि सत्य के चिंतन से प्राप्त होता है।

सुणहि वखाणहि जेतड़े हउ तिन बलिहारै जाउ ॥
जो लोग वास्तव में एकता के विचार को समझते और जीते हैं, वह आदरणीय हैं।

ता मन खीवा जाणीऐ जा महली पाए थाउ ॥२॥
वही मन आध्यात्मिक रूप से जागरूक होता है जो सर्वव्याप्त चेतना का निवास अपने भीतर अनुभव करता है। (२)

नाउ नीर चंगिआईआ सत परमल तन वास ॥
धर्म के जल में स्नान करो और सत्य की सुगंध से शरीर का अभिषेक करो।

ता मुख होवै उजला लख दाती इक दात ॥
ऐसे गुणों से युक्त व्यक्ति का मुख शांति का तेज दर्शाता है। शांति का यह एक उपहार लाखों उपहारों से बड़ा है।

दूख तिसै पहि आखीअहि सूख जिसै ही पास ॥३॥
अपना आंतरिक दुःख उसी एक सर्वव्यापी चेतना को व्यक्त करो जो सच्चे आनंद का स्रोत है। (३)

सो किउ मनह विसारीऐ जा के जीअ पराण ॥
उस सर्वव्यापी ऊर्जा की चेतना को मन से क्यों भूलें जो अस्तित्व का आधार है।

तिस विण सभ अपवित्र है जेता पैनण खाण ॥
उस सर्वव्यापी अदृश्य जागरूकता के अलावा संपूर्ण सृष्टि की गतिविधियाँ अशुद्ध हैं।

होर गलां सभ कूड़ीआ तुध भावै परवाण ॥४॥५॥
केवल प्रकृति की इच्छा ही सत्य और प्रामाणिक है। (४)(५)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि सभी सिद्धांत और विचार प्रकृति की इच्छा के सामने महत्वहीन हैं। प्रकृति ही सच्चाई, ज्ञान और मार्गदर्शन का सबसे प्रामाणिक स्रोत है। जब हम प्रकृति के तरीक़ों और इच्छा में हस्तक्षेप नहीं करते तब हम खुद को प्राकृतिक दुनिया के साथ जोड़ सकते हैं और इसके गहरे रहस्यों और ज्ञान को समझ सकते हैं। इस सत्य को अपनाने से जीवन में संतुलन और शांति आती है।

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com